यह प्रश्न-पत्र एवं उत्तर पुस्तिका संयुक्त है।

जय गुरु नाना **जय महावीर** **जय गुरु राम**

श्री साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड, बीकानेर

जैन संस्कार पाठ्यक्रम परीक्षा-2019

समय : 3 घण्टे
12:30 से 3:30 बजे तक

प्रश्न-उत्तर पत्र भाग - 12 आगम

अंक 100

नाम.. पिता/पति का नाम..

शहर का नाम.............................. जन्मतिथि.......................... मोबाइल.......................... रोल नं ....

नोटः-सभी प्रश्नों के उत्तर दिये गये निर्देशों के अनुसार, निर्धारित स्थान पर, इसी प्रश्न पत्र में लिखें। उत्तर पुस्तिका जाँचने पर यदि यह पुष्टि होती है कि परीक्षार्थी ने दूसरे का सहयोग लिया है अथवा एकाधिक पुस्तिकाओं के उत्तर समान हैं तो उसे नकल किया हुआ मानकर परिणाम निरस्त कर दिया जावेगा। केन्द्र अधीक्षक उपरोक्त प्रश्नोत्तर पुस्तिका परीक्षा समाप्ति के अगले दिन श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.) के पते पर भिजवावें।

पेपर 97 अंक एवं 3 अंक सामायिक के हैं। जैसे :- 3 सामायिक करने पर 3 अंक दिए जाएगे और 2 करने पर 2 अंक इसी क्रम में सामायिक न करने पर 3 अंक काटे जाएंगे।

1- lerk lLdkj ikB'kkyk ds fo|kFkhZ gks rks ¼✓½ lgh ;k ¼✗½ xyr djsaA ¼ ½

2- vkius fdruh lkekf;d dh gS 1]2]3 dkye esa fy[ksaA ¼ ½

(आगम विभाग)

प्रश्न 1. निम्न गाथाओं के भावार्थ लिखिए- **46**

1. परात्मनिन्दा प्रशंसे सदसद्‌गुणाच्छादनोदभावने च नीचै र्गोत्रस्या तद्विर्प्यर्यो नी चैर्व्रत्व्यनुंत्से कौचत्तस्य।

....

....।

2. अम्मताय! मए भोगा भुत्ता विसफ लोवमा।
   पच्छा कडुयविवागा अणुबन्ध-दुहावहा।

....

....।

3. खमावणयाए णं पल्हायणभावं जणयइ। पल्हायणभावमुवगए य सव्वपाण-भूय-जीवसत्तेसु मित्तीभावमुप्पाएइ। मित्तीभावभुवगए यावि जीवे भावविसोहिं काऊण निब्भए भवइ।

....

....।

4. जम्मं दुक्खं जरा दुक्खं रोगा य मरणाणि य।
टहो दुक्खो हु संसारो जत्थ कीसन्ति जन्तवो।।

.....
.....।

5. दुःख शोकतापाक्रन्दनवधपरिदेवनात्यात्मपरोभंयस्थान्यस द्वेद्यस्य।

.....
.....।

6. वन्दणएणं नीयागोयं कम्मं खवेइ, उच्चागोयं कम्मं निबन्धइ। सोहणं च णं अप्पडिहयं आणाफलं निव्वत्तेइ, दाहिणभावं च णं जणयइ।

.....
.....।

7. निम्ममो निहंकारो निस्संगो चत्तगारवो।
स्मो य सव्वभूएसु तसेसु थावरेसु य।

.....
.....।

8. खाइत्ता पाणियं पाउं वल्लरेहिं सरेहि वा।
मिगचारियं चरित्ताणं गच्छई मिगचारियं।

.....
.....।

9. वायणाए णं निज्जरं जणयइ। सुयस्स य अणासायणाए वट्टइ सुयस्स अणासायणाए वट्टमाणे तित्वधम्मं अवलम्बइ तित्थघम्मं अवलम्बमाणे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ।

.....
.....।

10. उवहि-पच्चक्खाणेणं अपलि मन्चं जणयइ। निरूवहिए णं जीवे निक्कखे, उवहिमन्तरेण य न संकिलिस्सइ।

.....
.....।

11. चक्षुरचक्षुरवधिकेवलाजां निद्रा-निद्रा निद्रा-प्रचला-प्रचला प्रचला स्त्यानगृ द्धिवेदनीया नि च। सदसद्वेद्ये।

.....
.....।

12. सुयाणि में पंच महत्वयाणि नरएसु दुक्खं च तिरिक्खजोणिसु।
निव्विण्णकामो मिम हण्णवाओ अणुजाणह पव्वइस्सामि अम्मो।

.....
.....।

13. जया मिगस्स आयंको महारण्णम्मि जायई।
अच्छन्तं रूक्खमूलम्मि को णं ताहे तिगिच्छई।

.....
.....।

14. निच्चं भीएणं तत्थेण दुहिएण वहिएण य।
परमादुहसंबद्धा वेयणा वेइयामए।

.....
.....।

15. सोइन्द्रियनिग्ग हेणं मणुन्नामणुन्नेसु सद्देसु रागद्वोसनि ग्गहं जणयइ, तप्पच्चइयं कम्मं न बंधइं, पुव्वबद्धं च तिज्जरेइ।

.....
.....।

16. लोभविजएणं संतोसीभावं जणयइ, लोभ वेयणिज्जं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

.....
.....।

17. तं बितं डम्मापियरो साअण्णं पुत्तं! दुच्चइं।
गुणाणं तु सहस्साइं घारे यव्वाइं भिक्खुणो।

.....
.....।

18. दंसणसंपन्नयाए णं भवमिच्छत्तद्देयणं करेइ, परं न विज्झायइ। परं अविज्झायमाणे अणुत्तरेणं नाणदंसणेण अप्पाणं संजोएसाओ सम्मं भावभाणे विहरइ।

.....
.....।

19. एस खलु सम्मत्तपख-कमसस अज्झयणस्स अट्ठे समणेणं भगवया महावीरे णं आघविए, पलविए, परूविए, दंसिए, उवदंसिए।

.....

.....।

20. नवचतुर्दशापञ्चद्विभेदं यथाक्रमं प्रागध्यानात्।
आलोचन प्रतिक्रमणतदुभयविवके व्युत्सर्गपश्द्देदपरिहारोपस्थापनामि।

.....
.....।

21. आलोयणए णं माया-नियाण-मिच्छादंसणसल्लाणं मोक्खमग्ग-विग्घाणं अणन्तरसंसारवद्धणाणं उद्धरणं करेइ। उज्जुभाव च जणयइ। उज्जुभावपडिवन्ने णं जीवे इत्थीवेय-नपुंसवेयं च न बंधइ। पुव्वबद्धं च णं निज्जरेइ।

.....
.....।

22. योगदुष्व्रणिघाना दरस्मृत्यनुपस्थापनानि।

.....
.....।

23. खाइत्ता पाणियं पाउं वल्लरेहिं सरेहि वा।
थ्मगचारियं चरित्ताणं गच्छई मिगचारिसं।

.....
.....।

प्रश्न 2. निम्न भावार्थ का मूल पाठ लिखिए- **20**

1. सुखसाता से विषयों के प्रति अनुव्युकता पैदा होती है। अनुव्सुकतां से जीव अनुकम्पा करने वाला, अनुद्भट एवं शोक रहित होकर चरित्र मोहनीय कर्म का क्षय करता है।

.....
.....।

2. शरीर के प्रत्याख्यान से जीव सिद्धों के अतिशय गुणों का सम्पादन कर लेता है। सिद्धों के अतिशय गुणों से सम्पन्न जीव लोक के अग्रभाग में पहुँच कर परमसुखी हो जाता है।

.....
.....।

3. उत्तमसंहनन वाले व्यक्ति का किसी एक विषय में अन्तःकरण की वृत्ति का निरोघ-टिकाये रखना-ध्यान है। वह अन्तर्मुहूर्त।

.....
.....।

4. परनिन्दा, आत्म प्रशंसा, सद्गुणों का आच्छादन–गोपन और असद्गुणो का प्रकाशन, ये नीचे गोत्र के बन्ध हेतु है।

.....
.....।

5. भावसत्य से जीव भाव विशुद्धी प्राप्त करता है। भावविशुद्धी में वर्तमान जीव अर्हत्प्रज्ञप्त धर्म की आराधना के लिए अद्यत व्यक्ति पर लोक धर्म का आराधक होता है।

.....
.....।

6. तीव्रभाव, मन्दभाव, ज्ञातभाव, अज्ञातभाव, वीर्य और अधिकरण की विशेषता से उस आश्रव में विशेषता अर्थात न्यूनाधिकता होती हे।

.....
.....।

7. कर्म के कारणभूत सूक्ष्म, एक क्षेत्र को अवगाहना करके रहे हुए तथा अनंतानन्त प्रदेश वाले पुद्गल योगवियशेष से सभी और से सभी आत्म प्रदेशों में बन्ध को प्राप्त होते है।

.....
.....।

8. स्तव–स्तुति–मंगल से जीव को ज्ञान–दर्शन–चरित्र–स्वरूप बोधिलाभ प्राप्त होता है। ज्ञान–चारित्ररूप बोधि के लाभ से सम्पन्न जीव अन्त क्रिया के योग्य अथवा (कल्प) वैमानिक देवों में उत्पन्न होने के योग्य आराधना करता है।

.....
.....।

9. प्रति पृच्छना से जीव सूत्र, अर्थ और तदुभव को विशुद्ध कर लेता है तथा कांक्षामोहनीय को विछिन्न कर देता है।

.....
.....।

10. निन्दना से पाश्चात्ताप होता है। पश्चात्ताप से विरक्त होता हुआ व्यक्ति करण–गुणश्रेणी को प्राप्त करता है। करणगुणश्रेणी प्रतिपन्न अणगार मोहनीय को क्षय करता है।

.....
.....।

प्रश्न 3. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए– **10**

1. सामाइएणं ..... जोगविरइं जणयइ।

2. ..... विरज्जमाणे आरम्भपरिच्चायं करेइ।

3. आज्ञाडपायविपाकसंस्थानविचयाय ..... मप्रमत्तसंयतस्था।

4. संजमेणं ..... जणयइ।

5. आर्तममनोज्ञानां ..... तद्विप्रयोगायंस्मृति समन्वाहारः।

6. सकषायत्वाज्जीवः ..... योग्यान् पुद्गलानादत्ते।

7. निरालाम्बणस्स य ..... जोगा भवन्ति।

8. संवरेणं ..... पुणो पावासवनिरोहं करेइ।

9. ..... प्राणव्यपरोपणं हिंसा।

10. भूतव्रत्यनुकम्पा दानं सराग्रसंय मादियोगः ..... शोचमिति सद्वेद्यस्य।

प्रश्न 4. नीचे लिखी लाईनों को सही करें। **7**

1. सरागसंयमसंयमासंयमाकामनिर्जराबालतपांसि मनुषस्स।

.....।

2. मार्गाच्यवन निर्जरार्थ परिषोढव्याः आस्त्रवाः।

.....।

3. सज्झाएणं दर्शणावरणिज्जं कम्मं खवेइ।

.....।

4. किरियाए भवित्ता तओ, पच्छा सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाएइ, सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ।

.....।

5. अहिंसादिष्विहामुत्र चापायावद्यदर्शनम्।

.....।

6. योगवक्रता अविसंवादनं चाशुमस्यनाम्नः।

.....।

7. सोहिए य णं विसुद्धाणं तच्चं पुणो भवग्गहणं इक्कमइ।

.....।

प्रश्न 5. निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए- **17**

1. दर्शन विशोधि के द्वारा विशुद्ध जीव उत्कृष्ट कितने भव में मोक्ष जाता है?

.....।

2. सम्यक्त्व पराक्रम के 73 बोलों में 45 वाँ बोल कौनसा है?

.....।

3. महानाग किस प्रकार केचुली का त्याग करता है उसी प्रकार मृगापुत्र ने किसका त्याग किया?

.....।

4. मृगापुत्र का नाम क्या था?

.....।

5. नाम कर्म की जघन्य स्थिति क्या है?

.....।

6. छदमस्थ वीतराग में कितने परिषह हो सकते हैं?

.....।

7. साधुजीवन की तुलना किससे की गयी है?

.....।

8. माता-पिता ने अनुमति देते हुए श्रमण जीवन के किस दु:ख को मृगापुत्र से कहा?

.....।

9. निश्चल और निशंक होकर श्रमण धर्म का आचार 01 करना किसकी तरह दुष्कर है?

.....।

10. निर्वेद से जीव क्या प्राप्त करता है?

.....।

11. किससे जीव को प्रहलादभाव की प्राप्ति होती है?

.....।

12. योग निराघ अवस्था में जीव कौन सा ध्यान ध्याता है?

.....।

13. परभव में जाने वाला जीव किस प्रकार वेदना रहित और सुखी होता है?

.....।

14. बलभद्र राजा किस नगर के राजा थे?

.....।

15. भोग किसके समान कटु और दु:खी दायी हैं?

.....।

16. श्रमण को देखने से मृगापुत्र को कौन-सा ज्ञान उत्पन्न हुआ?

.....।

17. ऐर्यापथिक कर्म की कितनी स्थिति हैं?

.....।